साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 53, जनवरी(द्वितीय) , 2019

गुजराती कहानी:

कृष्ण

लेखक: केशुभाई देसाई
अनुवादक: डॉ.रजनीकान्त एस.शाह

यामिनी के एरपोर्ट पर उतरते ही मामा ने जो पहली सिखावन गांठ बँधवाई थी,उसका स्मरण हुआ। वैसे भी हम तो `आउट साइडर' इन लोगों से थोड़ा बचकर चलना ही बेहतर। अभी हमारा सामान उठाते हैं, हमें झुक झुककर सलाम करते रहते हैं, पर जरा भी उनके विरुद्ध हुआ, कि वे अपनी औकात दिखाने में देर नही लगायेंगे! ऐसे किस्से यहाँ अक्सर होते ही रहते हैं। इसलिये मैं तुम्हें आगाह कर रहा हूँ। घर का आदमी है-बहुत छोटा था तबसे हमारी ज़िम्मेदारी बन गया है। वह एकदम घर का सदस्य हो गया है, फिरभी इस ऑस्टिन का भी भरोसा करना नहीं। आखिरकार उसका खून तो नीगर का ही है!

तब वह नयी नयी न्युयोर्क में आई हुई थी। ऑस्टिन का डर रखने का तो अब प्रश्न ही नही था। वह बेचारा नाइन-इलेवन की दुर्घटना में मर जो गया था। उसका कोई अतापता ही नहीं मिला था। मात्र इतनी ही खबर थी कि ट्रेडसेंटरवाली घटना घटी उसके एक घंटे पहले वह घर से निकल गया था। दुकान खोलने की ज़िम्मेदारी उसकी थी। अत: उस समय वह अवश्य दुकान में ही होना चाहिए। उसके बाद इतना सारा वक्त गुजर गया फ़िरभी वह दिखाई नहीं दिया था। अत: शासन ने भी उसे नाइन-इलेवन के शहीद के रूप में स्वीकार कर लिया होता। तख्ती पर भी उसका नाम आ गया होता, पर वह `ए टु झेड डिपार्टमेंटल स्टोर्स' के पे-रोल पर नही था। इसलिये मामा ने खुद उस विषय में चूप रहना उचित समझा था। उसका नाम जाहिर करने से सौ प्रकार की नयी तकलीफ़ें खड़ी होंगी। कौन था? कहाँ से आया था? आप उसे कितनी तनख्वाह देते थे? प्रति घंटा के हिसाब से देते थे या अंदाज से(Lump sum) ही देते थे? इतने समय से वह आपके साथ रहता था, फिरभी आपने उसे पे-रोल पर रेग्युलर सर्वन्ट के रूप में क्यों नही रखा था?-एकबार भी पुलिस को जरा सी भनक लग गई तो वह आपके पीछे ऐसे लग जायेगी कि आप थक जायेंगे! फिर यह तो अमरिकी पुलिस। उसे न तो पत्रं पुष्पं से मनाया जा सके या

न तो उस पर किसी सेनेटर की सिफ़ारिश भी चलेगी। उल्टे वह तो और गहराई में जायेगी। बात का बात का बतंगड़ हो जायेगा और उसमें से सारी गड़बड़ी पकड़ी जायेगी। आ बैल मुझे मार,`मिसिस ऑस्टिन,आप उस वक्त कहाँ थीं?'

इतनी कल्पना मात्र से ही यामिनी सिहर उठती थी। यदि ऐसा हुआ तो स्वयं इतने बड़े आर्थिक साम्राज्य के पतन का निमित्त बन जायेगी, इसमें कोई शंका नहीं। हाँ,एकबार सच बाहर आ जाये तो बेचारे मामा के लिये तो मुंह दिखाना भी मुश्किल हो जाये। खुद अपशगुनी हूँ। -ऐसी देशना(छाप) ससुरालवालों की पुरानी मान्यता पर अमरिकी मुहर लग जाये: देखा? इस अपशगुनी का पैर जहां भी जायेगा वहाँ ऐसा ही होना है। हमने तो अपना अमूल्य बेटा खोया है,पर उसके मामा सहानुभूतिवश उसे सात समंदर पार ले गये। वहाँ भी उसने अपना असली रूप दिखाया। दहलीज पार करते ही पीढ़ी को पनौती लग गई...बेचारा भोला-भाला दानेश्वरी रास्ते पर आ गया। खून के आँसू रोने लगा। रातोंरात रोड पर आ गया...

स्वयं मात्र यामिनी नहीं थी। देश के सगे-संबंधियों के लिये वह सुरेश कनैयालाल पण्ड्या की धर्मपत्नी, सॉरी `विधवा' थी। अमरिका के लिये वह मिसेज ऑस्टिन थी। रजिस्टर्ड हुई मेरेज का प्रमाणपत्र उसने जेवर की तरह सम्हाले रखा था। यही उसकी जिंदगी का दारोमदार था। ऑस्टिन का पता नहीं चले और शासन उसे मरा हुआ घोषित करे या खुद उससे अलग रहती होने की अर्जी देकर कोर्ट से तलाक मांग ले तभी वह पुन: यामिनी बनकर रह सकती है,पर ऐसी कोई जल्दबाज़ी करने की जरूरत नहीं थी। मामा ने जो सोचा होगा, वह उसके हित को नजर में रखकर ही कुछ सोचा होगा। उनको जैसा ठीक लगेगा, करेंगे। हमें अनावश्यक रूप से बिना कुछ सोचे समझे हुशियारी दिखाने की जरूरत क्या है। ऐसा कुछ कभी नहीं होना चाहिए कि वे हमारा भला सोचें और हम ही उन्हें नुकसान पहुंचायें। मर जाना बेहतर होगा पर मुंह से उफ तक नहीं निकलनी चाहिए कि जिससे वे मुसीबत में फंस जायें।

सुबह ठीक पाँच बजे जागकर वह अपने काम में व्यस्त हो जाती थी। मामा-मामी के लिये ब्रेकफ़ास्ट तैयार कर देती, पूजापाठ की सामग्री रख देती थी। नील और चारु देर रात तक टी.वी. पर सीरियलें देखते रहते और सब के बाद देरी से उठते थे। उनके लिये यामिनी `रिलेटिव' से ज्यादा `हाउसमेड' थी। ऑस्टिन से शादी की थी, इसलिये दर्जा भी वही गिना जायेगा न! ऑस्टिन के साथ रहती होती तो भी उन्हें कहाँ विरोध था? घर का वफादार नौकर था। घड़ी के इशारे वह उसकी कार लेकर पहुँच जाता । डेडी उसे डिपार्टमेंटल स्टोर्स की चाभियाँ देते। वह चूपचाप चाभियाँ उठाकर चला जाता। स्वयं इस घर का नौकर था, इस बात की उसे प्रतीति हरपल होती रहती थी। वह समझ नहीं पा रहा था, ऐसा थोड़े ही था? पर बॉस का हुक्म सिर-आँखों पर चढाना ही अपना धर्म है,उतना ही वह सोचता रहता था। इससे आगे कुछ नहीं। डेडी ने पता नहीं कितने सारे पेपर्स पर अनावश्यक दस्तखत कराये होंगे! बिना कुछ बोले वह, बिना कुछ

सोचे दस्तखत करता गया। इससे उसे क्या फायदा होगा ,ऐसा पूछने के बारे में तो उसने कभी सोचा ही नहीं था। बॉस का फायदा ही अपना फायदा और बॉस का कायदा ही अपना कायदा। अनावश्यक पूछताछ करके दिमाग खराब करने से क्या कोई मतलब निकलेगा? सामनेवाला यदि कोई रिस्पोन्स नहीं देता हो तो, उचित रेम्यूनरेशन नहीं देता हो तो अलग बात है। यहाँ तो वह स्वयं समूचे डिपार्टमेंटल स्टोर्स का `ए' टु `झेड' था। नौकर से लेकर मालिक तक आप जो चाहे समझो। उसे भी हल्का सा संकेत तो था ही, कि बॉस उससे बारबार मेरेज और डायवोर्स पेपर पर दस्तखत करवाते रहते हैं। ओ.के. इससे क्या फर्क पड़ता है? बॉस के लिये अपना एक छोटा सा दस्तखत किसी रिलेटिव को स्टेट्स में सेटल करने के लिये काम आते हों और उससे किसी कानूनी परेशानी उठानी पडनेवाली नहीं हो तो भले ही एक के बजाय एक हजार दस्तखत करने पड जाये!

अंततोगत्वा तो उसमें बॉस के प्रति वफादारी ही व्यक्त होनेवाली थी न! डॉलर लेकर दस्तखत कर दिये हों तो थोड़ा खटका भी रहे। अपनेआप से धोखा किया हो तो ऐसा लगता रह सकता है, पर यहाँ तो मात्र नि:स्वार्थसेवा थी।...उन्हें भी मेरे प्रति कितना भरोसा होगा, कि उस फेमिली की स्त्रियों का मेरे साथ `ऑन पेपर' ब्याह कराते रहे हैं....एक की फाईल क्लियर हुई नहीं कि तुरंत डीवोर्स। छह महिनों में तो दूसरी इंडियन गर्ल के साथ विवाह। ऑस्टिन शायद अपने आप को खुशनसीब समझता होना चाहिए। इतनी सारी लड़कियों के साथ - एक से एक बढ़कर ललनाओं के साथ अपनी तस्वीरें, बल्कि रजिस्टर्ड मेरेज के प्रमाण-पत्र। किसी नीगर के भाग्य में क्या ऐसा सुख हो सकता है? उसके मन में एक उम्मीद बनी रहती थी, कि एक दिन बॉस उसे सचमुच कोई इंडियन वाइफ ला देंगे। उसे ऐसी कोई जल्दी भी नहीं थी, पर अंदर ही अंदर उसे इंडियन ब्यूटी सनक अवश्य लगी थी। बॉस उसके लिये साक्षात गोड थे। उन्हें अपने मन में जगी हुई इस एषणा की भनक न पड जाये, ऐसा तो कौन सा अंधेर था! वह उनके साथ इस्कॉन के हरेकृष्ण मंदिर में भी जाता था। उसने कहीं पढ़ा था, कि लॉर्ड कृष्ण के सोलहहजार रानियाँ थीं। यह जानकर उसने मीठा रोमांच भी अनुभव किया था। कहा गया है, कृष्ण इतनी सारी स्त्रियों के पति होते हुए भी ब्रह्मचारी थे! वह सोचता था :

कईं बार उसे इस्कॉन का साधु हो जाने का मन कर जाता था। प्रभुजी ने जब उसे कृष्ण का शब्दार्थ समझाया तब तो मानो वह मरने पर आ गया था : कृष्ण मिन्स ब्लेक! लॉर्ड कृष्ण वोझ ब्लेक लाइक यू...रियली! बिलिव मी, आय`म नोट जोकिंग। वोझ ही ए नीगर लाइक मी? उसने बड़े हुलास के साथ अपनी जिज्ञासा की थी। `कान्ट से,बट ही वोझ ब्लेक,धेट्सऑल।' उसे कुछ बुरा भी लगा था। कृष्ण काले सही, पर नीगर तो जरा भी नहीं। ये लोग अपने मन में क्या समझते होंगे- ब्लडी इंडियंस। उसने अपनी खीझ को दबाये रखा था। ओ.के.! आई`ल शो यू वन डे। मैं आपकी इंडियन ब्राइड से शादी करके आपके ही आशीर्वाद लेने आऊँगा,तब आपको पता चलेगा कि अमरिकी नीगर क्या चीज है!

यामिनी को वह शाम याद आ जाती थी और नखशिख कांप उठती थी। नो,नो,नो,प्लीज,ऑस्टिन, प्लीइज...!

पर उसके दिमाग पर जानवर सवार था। आय`म कृष्ण अँड यू माय राधा!'' वह उससे चिपक गया था। काला एकांत यामिनी को डसता रहा। उसकी जीभ मानो सी गई थी। वह यदि कहे भी तो किसे? ऑस्टिन ने तत्पश्चात कभी भी उसके सामने आँख उठाकर देखा नहीं था। सुबह वक्त पर आता और चाभियाँ लेकर चलता बनता था। मामी कभी ब्रेकफ़ास्ट करने के लिये आग्रह करे तब भी वह सुना-अनसुना करके चला जाता था। मामा ने एकबार चाय पीने के लिये कहा, तब वह घड़ी की ओर देखने लगा था।``थैंक यु सर,बट सॉरी, आय`म ओलरेडी ए बीट लेइट...'' अत्यंत पंक्च्युयल।

और,कुछ समय बाद एक दिन आकाश में मौत की घरघराहट की आवाज उठी थी। कुछ ही देर में सबकुछ खत्म हो गया। टॉवर्स टूटकर गिरे हुए थे। ऑस्टिन चाभियां लेकर अभी अभी आधे घंटे पहले तो गया था। उसने भले ही यामिनी की ओर न देखा हो, पर वह तो उसे ठेठ कार में बैठने तक तिरछी नजर से देखती रही थी। प्रत्येक सांस के साथ उसे ऑस्टिन का वह राक्षसी चेहरा याद आता था। अलबत्ता, मालूम नहीं क्यों? पर वह उससे नफरत नहीं कर पाती थी। पुरुष किसे कहते हैं, उसका उसे पहली बार अनुभव हो रहा था....क्योंकि उसकी मूल शादी तो मुर्दे के साथ हुई थी! शायद इसीलिये उसे मन ही मन माफ कर दिया था। हाँ, उसने गलत भी क्या किया था? शादी के अधिकार ही तो भोगे थे-इससे ज्यादा कुछ नहीं और वह भी कुछ मिनटों के लिये। नो, नो, नो,ही वोझ नोट एट फोल्ट। यदि कोई क़ुसूर है तो वह उसकी किस्मत का ही था। ऑस्टिन का हरगिज नहीं। बल्कि वह तो आज भी कागज पर उसका कानूनन हसबन्ड ही था। उसे कोई भी कोर्ट ऐसा करते हुए रोक नहीं सकता। बल्कि स्वयं उसे ऐसा हक भोगने से रोके तो वह कोर्ट में मुकदमा दाखिल करा सकता है। इस मुद्दे पर वह तलाक तक मांग सकता है! यामिनी कानून नहीं जानती थी, ऐसा थोड़े ही था? उसे ऑस्टिन की पत्नी के रूप में -उसकी `वाइफ' के रूप में अमरिका आने का मौका मिला था। मामा ने उसे नौकरी दी होगी, पर ऑस्टिन ने तो अनजाने में ही ज़िंदगी दे दी होगी। वह भी बिना किसी अपेक्षा के। मानों अपना कोई अधिकार ही न हो ऐसे।

उसे ऑस्टिन पर रहम आ गया। सारे कहते थे, कि वह मर गया था, वह अकेली चाहती थी कि बेचारा नीगर कहीं जिंदा होता तो अच्छा होता। यह सच है, कि उस दिन आकस्मिक हमले से वह स्वयं सकते में आ गई थी। नमक की पूतली ने पहली बार समुद्र देखा था। वह शाम,वह एकांत,ये शहदमीठे दंस...

यामिनी वह सब भूल जाना चाहती थी,परंतु प्रात: वेला में डिपार्टमेंटल स्टोर्स की चाभियाँ लेने के लिये आ रहे ऑस्टिन को देख उसके रॉम रॉम में झनझनाहट उठ जाती थी। वह सोचने लग जाती थी। आम की डाली पर डालपक पक गया हो-फिर उस पर तोता बोले या कौआ: उस शाख पर क्या फर्क पडनेवाला है? उसे ब्रश करते करते वह मुरदार देसी चेहरा याद आ जाता था। खानदानी संतान होने के नाते वह घोड़े पर चढ़कर शादी करने के लिये आया था। तात्कालिक तो उसे अमूल्य समझकर अपना लिया था,पर तब किसे खबर थी कि उसके हृदय का वाल्व कमजोर था! बेचारा बोलते बोलते हांफ जाता था। यदि मामा-मामी को बीच मझधार डूबी हुई भानजी की नैया पर रहम न आया होता तो देश में समाज की खानदान विधवा के रूप में जी रही होती! जिसकी भी चपेट में आई होती वह बतरस लेकर टाल जाता। कोई उसके शगुन भी लेता नहीं। अब तक तो ठोकरें खा रही होती।

यहाँ भले ही घोर मजूरी हो, पर कोई पूछनेवाला तो नही। मात्र नील और चारु को ही सम्हाल लेना था। अमरिकी गुजराती में बोल रहे भाई-बहन को शुरू शुरू के महिनों में वह परायी लगना सहज ही था, पर वह स्वयं अपनी योग्यता प्रमाणित कर दिखाएगी तब वे आज जो नफरत कर रहे हैं, उससे कहीं दुगुना प्यार भी करेंगे। नीगर की सबसे बड़ी कमी इन बच्चों को अनुभव हो रही थी। बात बात में दोनों भाई-बहन उसे याद कर करके आर्द्र हो जाते थे। मामा-मामी उसे भूल जाने की सीख देते थे तब दोनों दलिलें करने लगते थे।``हम उसे कैसे भूल सकते हैं?उसने हमें ड्राइविंग सिखाया है, उसने हमें नायग्रा फॉल्स का ट्रिप कराया था। इट वोझ ही - माइंडवेल - हु गेव मेक्सिमम टाइम टु अस...''

मामा छिड़ जाते थे,``इवन योर मोम हेज डन इट! उसने आपको नौ-नौ महिनों लगातार पेट में संभालकर रखा है। यह क्यों भूल जाते हो? नीगर को तो हम पैसे देते थे। मोम वोझ नेवर पैड,वोझ शी? टेल मी?''

दोनों ही बच्चे मन ही मन गुस्सा करते थे। कभी अकेली पाने पर मेरे सामने अपनी पीड़ा व्यक्त करने लगते थे,``तुमने सुना न,उस शाम डिनरटेबल पर डेडी का लेक्चर? बोलो, किस हद तक कोमर्शियल हो जाते हैं, हमारे लोग। यह धरती ही ऐसी है।''

चारु दलील पर उतर आती,``फॉर गोड्स सेक,प्ली...ज, डोंट ब्लेम ध लेंड। नीगर तो यहाँ का ही था न? उसने कभी कोमर्शियली बिहेव किया है? उसने कभी ज्यादा वक्त दिया हो तो क्या उसका मुआवजा मांगा है?''

यामिनी विवाद पर उतारू हुए भाई बहन को सच्ची बात समझाने की कोशिश करती थी,``ऑस्टिन को तो मामा ने जिंदगी दी थी! जिन्दगी से ज्यादा कीमती कुछ भी नहीं है। एम आई रोंग?''

उसकी बात को गलत भी तो कैसे कहें! दोनों भाई-बहन अपनी अपरिपक्व समझ को लेकर पछताने लगते। बेचारा नीगर ओर्फन था। उसकी माँ मर गयी थी और बाप ने दूसरी शादी कर ली थी। ऐसे दु:खी लड़के को डेडी ने काम दिया। अमरिका में तो काम ही जिंदगी। नीगर को देख चिढ़नेवाले व्हाईट लोग भी तब दंग रह गये होंगे। डेडी तो उसे किसी अच्छी लड़की खोजकर शादी भी करा देते,पर बेचारा उससे पहले तो.....

और सब नाइन-इलेवन की उस काली याद में नतमस्तक होकर पल-दो पल के लिये मौन धारण कर लेते थे।

यामिनी मन ही मन जलती रहती थी। ऑस्टिन को नीगर कहे, वहाँ तक तो ठीक, पर उसे मामा कोई अच्छी कन्या खोजकर शादी करवा देते, यह कल्पना ही उसे हास्यास्पद लगती थी। यदि उसे सचमुच ब्याह देते तो देश से सगे-संबंधियों को स्टेट्स लाने के लिये और कोई नीगर खोजना पड़ता ना! और मान लो, कि ऐसा कोई मिल भी जाता क्या वह मुफ्त में किसी अनजान लड़की का वर होने के लिये थोड़े ही राजी होता? बिज़नेस मीन्स बिजनेस। मेरेज पेपर्स हो या डिवोर्स पेपर्स। कोई भी बिना देखे ही ऑस्टिन की भांति दस्तखत नहीं करेगा। यह तो अमरिका है, कहीं पकड़ा गया तो जिंदगीभर जैल में सड़ते रहना पड़ जाये। सीधे देशद्रोह का गुनाह लागू हो जाये। कल कोई टेररिस्ट या स्युसाइड़ बम्बर भी अमरिकी सिटीजन की बहू होकर घुस सकती है। आज के हालातों को देखते हुए, कुछ भी असंभव नहीं है।

चारु उम्र में छोटी थी, पर समझदारी में नील से बड़ी लगती थी। उसने स्पष्ट अभिप्राय देते हुए कहा।``डेडी भले ही समाजसेवा मानकर सगेसंबंधियों को यहाँ खींच ले आते हों, पर इस तरह जाली दस्तावेज़ बनाना कभी उनको भारी पड जायेगा।'' क्षणभर होंठ बंद करके उसने बात आगे चलायी,`फॉर एक्झांपल, मानो कि नीगर ने आपके साथ ओफिसियली मेरेज कर ली है, ऐसा समझा जायेगा या नहीं? एकाएक आकर वह मेरेज के राइट्स भोगने के लिये प्रपोज करे तो आपकी दशा क्या होगी? यू सिम्पली कान्ट प्रिवेंट हीम! आखिर तो वह आपका हसबन्ड है।''

नील हंसने लगा था।``आइ`ल शूट हिम राइट-अवे! ऐसा प्रपोज करने का साहस तो करे वह! उसे अपनी हैसियत का तो खयाल करना चाहिए! आखिरकार वह इस घर का मामूली नौकर है, डेडी का वह कोई गोद लिया हुआ बेटा नहीं, कि यामिनी को छेड़ने का साहस भी करे। नाइन-

इलेवन से पहले ही उसका काम तमाम हो गया होता,अंडरस्टेंड? और फिर मैं उसे पोलीथीन बेग में बंद करके हजार मिल दूर कोलोराडो जैसी किसी नदी में बहा आया होता...''

यामिनी ने नील की आँखों में वृत्रासुर के अट्टहास का अनुभव किया था। वह कांप उठी थी। उसे चक्कर आने लगे थे। उसे आँखों के आगे अंधेरा छाने लगा था। इसलिये वह जहां खड़ी थी, वहीं बैठ गई थी। वह बेचैनी अनुभव कर रही है, ऐसा सोचकर चारु ने उसे आराम करने के लिये सुझाया। उसने सॉफ्टड्रिंक बना दिया था। यामिनी को उसके कमरे में छोड़ आने के बाद चारु ने नील को आड़े हाथों लिया।``तुझे नीगर की कोई हरकत कबूल नहीं है, इतना तो समझा जा सकता है पर डेडी उसका कितना दुरुपयोग कर रहे हैं, इसका तो विचार कर! बेचारा आँखें मूंदकर पेपर्स पर दस्तखत कर देता है। इस प्रकार किसी की भलमनसी का दुरुपयोग तो नहीं किया जा सकता ना! उसे कम दिया, नाम दिया-यह प्रशंसनीय बात है,पर उसका शोषण किया-इंडिया से अपने रिश्तेदारों को यहाँ बुला लेने के लिये उसका मिसयुझ किया, उसका क्या? यह तो बंधी मुट्ठी है तब तक, अन्यथा भेद खुल गया तो डेडी की इज्जत क्या रह जायेगी?

नील को चारु की बात में तथ्य लगा था। उसने उसकी प्रकृति के अनुरूप तुरंत प्रतिभाव देते हुए कहा था, `आई एग्री विथ यु। नीगर इज नो मोर, अन्यथा मैं ही उसे कह देता, कि तुम्हें डेडी का सारा कहा मानना जरूरी नहीं है। अबकि बाद कोई पेपर साइन करने के लिये कहे तो स्पष्ट मना कर देना: इस बार जो लड़की आयेगी वह मेरी पत्नी होकर रहेगी! कहो कबूल है? कबूल है तो दस्तखत कर दूँ, अन्यथा आने के बाद चार-छह महिने बाद डिवोर्स पेपर लेकर आओगे तो ठेंगा दिखा दूंगा। बाद में दौड़ते रहना कोर्ट में, तब पता चलेगा।''

यामिनी उसके कमरे में सोये सोये नील का डायलॉग सुन रही थी। उसने सोचा, भले ही नील उद्धत हो, पर मामा जैसा शोषक तो नहीं ही था। उसे सच्ची बात समझने में कुछ देर लग जाती थी। एकबार सही गलत की समझ आ गई कि तुरंत वह सत्य की तरफदारी करता था। बड़ा होकर मामा के करतूतों का भंडाफोड़ अवश्य करेगा। अब तक तो कम से कम दस-बारह फेमिली मामा की मेहरबानी से अमरिका में सेटल हो गई थीं। हर बार उन्होंने बेचारे नीगर की भलमनसी का गैरफायदा उठाया था। वहाँ रह रहे रिश्तेदार को सारी प्रक्रिया समझा देते थे। सामनेवाली व्यक्ति को तो इसमें कहाँ कुछ गंवाना ही था। -सिवा सिर्फ नैतिकता! कागज पर तो सबकुछ ओ.के. ही लगे। कोर्ट भी कुछ कर नहीं सकता। ज्यादा से ज्यादा नैतिक मूल्यों का निर्वाह करने की कुछ सयानी कॉमेंट करके केस फाईल कर दे और नीगर भला थोड़े ही विरोध करनेवाला था? वह तो चुपचाप जैसा कहा जाये ऐसा करनेवाला। वकील जितना सिखलाये, उतना ही बोलनेवाला। नमकहलाली किसे कहा है! बॉस की इच्छानुसार, दिन होने पर भी बॉस यदि रात कहने का हुकम करे तो हमें रात कहना है। आखिरकार बॉस तो बॉस ही है।

यहाँ ऑस्टिन की पत्नी बनकर आई कईं लड़कियों ने तो नीगर को शायद देखा तक नहीं होगा। आने के बाद तुरंत डिवोर्स की प्रक्रिया शुरू हो जाती है- और फिर देश में जाकर देशी लड़के से शादी कर लेना। प्रमेय पूरा। मूलत: मामा गणित विषय के साथ एम.एस.सी.थे न। उसमें भी भूमिति उनका प्रिय विषय, पर यह `मोड्स ओपरेंडी' यदि किसी अखबारवाले की नजर चढ़ गई तो? कब क्या हो-कुछ भी नहीं कहा जा सकता। अलमारी जब तक बंद है,तब तक ठीक है। जिस दिन खुल गई, उस दिन उसमें से एक ही प्रकार की कहानियों के दस-बारह कंकाल एकसाथ बाहर आ जायेंगे। यह बात तो तय है।

उसकी नजर के सामने ऑस्टिन का भूखा चेहरा कुलबुलाता रहा। मानो पुन: एकबार एकान्त देखकर वह व्याकुल हो गया हो, ऐसे बिछौने पर सोयी हुई भोली यामिनी पर झुका हुआ था।

प्ली...झ। ऑस्टिन....आय`म नोट वेल,यू नो! प्ली...झ, मुझे समझने की कोशिश कर...' वह क्या बड़बड़ा गई, उसकी उसे भी कहाँ खबर थी! उसकी आवाज सुनकर चारु दौड़कर चली आई।

``यामिनी! एनी थिंग रोंग विथ यु? डॉक्टर को फोन करूँ?'' यामिनी ने बोलने की कोशिश की,पर एकाएक उबकाई आ गई। अत: उससे कुछ बोला नहीं गया। हाथ हिलाकर उसने मना किया। चारु ने स्टोर पर गई मॉम को फोन जोड़कर कहा,``यामु को बहुत तकलीफ है। शी इज वोमिटिंग।''

कुछ ही देर बाद मामी उसके बेड के पास खड़ी थीं।`यामु!' उनके दिल में यकायक मृदुता आ गई। बेचारी बिन माँ-बाप की लड़की! नसीब ने उसका सारा सुख झपटकर उसे हमारे सहारे रख दिया है। आज उसे कोई अच्छा लड़का देखकर सेटल कर देने की चर्चा चल ही रही थी कि यकायक- उनको यामिनी की दशा को समझने में देर नहीं लगी। डिट्रोइट के दूर के रिश्तेदार के लड़के के साथ उसका संबंध जोड़ दें तो कैसा! सुबह तड़के बिछौना छोडने से पहले उनके दिमाग में यह बात आई थी। स्टोर में जाकर उन्होंने मुकुंदभाई के समक्ष यह बात रखी, तब उन्हें भी यह दरख्वास्त पसंद आई थी। अब पुरानी परम्पराओं को पकड़े रहने में कोई फायदा नहीं है। उपरांत,यह बेचारी तो निरधार लड़की। देश में रही होती तो कोई उसके पास फटकने का भी नाम नहीं लेता। ससुराल पहुँचते ही वर को खा गई-मरी डाकिन है डाकिन-'' कहकर दुनिया ने उसे बदनाम कर दिया होता। यहाँ आई, इसलिये बच गई। उसमें क्या नहीं था? रूप है,गुण है,ग्रेज्युएट है, इसलिये आते ही इंगलिश भी कितना जल्दी पीक`प कर लिया...मानों बरसों से अमरिका में रहती हो, ऐसे यहाँ के वातावरण के साथ एडजस्ट हो गई है। उसके योग्य कोई

साथी मिल जाये तो इससे भला बेहतर क्या हो सकता है? पर पहले डिवोर्स पेपर्स तो बनवाने पडेंगे और इसके लिये उस नीगर के दस्तखत चाहिए..

मुकुंदभाई चिंतित हो गये। उसे तो अपने डेईली रजिस्टर से बहुत पहले निकाल दिया था परंतु अनावश्यक पडपूछ से बचने के लिये उसके बारे में कहीं कोई कंपलेन तक दर्ज करवाई नहीं थी। केझ्युअल कोर्स में कोई एक लड़का काम पर आता हो, प्रति घंटा के हिसाब से काम करके चला जाता हो, और फिर कभी आना बिलकुल बंद कर दे,ऐसे ही ऑस्टिन का नाम उसके कर्मचारियों की सूची से कम हो गया था।

वह मर गया है, इस बात की प्रतीति हो तो यामिनी अपनेआप छूट जाये ऐसा था। विडो ऑफ ऑस्टिन,ध स्टोरकीपर। बात खत्म,पर इतना वक्त बीत जाने के बाद उसका कंकाल निकालें तो कहाँ से? पता नहीं, कितने नये नये सवाल उठ खड़े हों! ऑस्टिन के द्वारा बारबार इंडियन लड़कियों से की हुई शादियों के षडयंत्र बाहर आ जाये, उसमें `ए टु झेड डिपार्टमेंटल स्टोर्स को तो डूबने की ही नौबत आ जाये।

``भानजी है, यदि वह सुखी रहे तो भगवान भी राजी रहे।'' मुकुंदभाई ने रेखाबहन की दरख्वास्त का स्वागत करते हुए कहा,``पर बेचारी लड़की मानों कमनसीबी को गांठ से बांधकर आयी है! उसे ऑस्टिन की वाईफ के रूप में ही पहचाना जाना होगा, सरकारी बहीखाते में तो भले ही हम सामनेवाले को समझा-बुझाकर उसकी गृहस्थी बसा दें पर वह मेरेज ओफिसियल नहीं मानी जायेगी, क्योंकि शी ईझ ओलरेडी मेरीड टु एन अमरिकन। न तो वह विधवा है और न डिवोर्सी। कहो अब यह दु:ख किसे सुनायें?

रेखाबहन भी व्यथित हो गई थीं।

``यामु बेटा!'' उन्होंने प्यारभरे आर्द्र स्वर में उसके कान में धीरे से कुछ पूछा। यामिनी के चेहरे पर एकसाथ लाली और फीकापन आ गया। उसने कुछ कहा नहीं। उसकी आँख से एक आँसु ललचकर गिर पड़ा।

``मैं तो तुम्हें सैटल करना चाहती थी। आज ही मामा से बात की थी। डिट्रोइट में अपने ही दूर के एक रिश्तेदार का लड़का है।''

यामिनी ने बीच में ही मामी को रोक दिया, मुझे मेरेज में इन्टरेस्ट नहीं है। मामी। प्ली...झ,फिर नयी चिन्ता में क्या पड़ना?'' ``फिरभी सोच लो, बेटा! हम तो आखिरकार ठहरीं औरत का अवतार।'' मामी की आँख में आँसू उमड़ आये,``अब, उस पुरानी सिस्टम में पड़े रहना

किसी को पसंद नहीं। हम गायनेक डॉक्टर के पास जाकर काम तमाम कर देते हैं। नेक्स्ट वीक की एपोइंटमेंट ले लेते हैं।''

यामिनी तनिक विचार में खो गई। एकसाथ दो चेहरे उसकी आँखों के सामने झलकने लगे। एक मुर्दा था और एक मर्द था।

``ना,मामी! मुझे ऐसा कुछ नहीं करना है? मुझे मेरी किस्मत पर छोड़ दीजिये,प्ली...झ।''
पास खड़ी चारु ने यामिनी का पक्ष लिया।

`` उन्हें अपनी जिंदगी अपने ढंग से जीने का अधिकार है, मोम! उन्हें डिस्टर्ब मत करो।''

`` तुम जरूरत से ज्यादा हुशियारी मत दिखाओ, उसकी तो अभी उम्र ही क्या है? अकेले कैसे जिंदगी बिताएगी बेचारी? यु नो शी इज केरींग!''

``इतना तो समझ सकती हूँ, इसलिये तो कह रही हूँ तुम्हें!'' चारु आँखें दिखने लगी,``उसका मातृत्व छिन लेने का किसीको क्या अधिकार है?''

रेखाबहेन को हंसी आ गई। चारु उत्तेजित हो गई। उसने चीखकर कहा,`` मोम! देखो मैं आपको चिता रही हूँ। यामिनी की इच्छा विरुद्ध अबोर्शन कराया तो मैं सारी बात अखबार में दे दूँगी!''

सबको शांत करते हुए नील ने कहा,``यामिनी के बच्चे की सारी ज़िम्मेदारी मेरी। बाकी जो सोचना हो, वह सब उसकी डिलिवरी के बाद सोचना। अभी फिलहाल तो इस प्रकरण को यहाँ पर ही बंद कर दीजिये।''

कुछ महिनों बाद,यामिनी ने हॉस्पिटल में बेटे को जन्म दिया। योगानुयोग उस दिन जन्माष्टमी थी, अत: सबने एकसाथ उसका नाम कृष्ण रख दिया। फिर एकबार यामिनी की आँखों से अश्रुधारा बह निकली। उसने पलकें बंद की कि वह नीगर जिंदा हो गया।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें